बी.एच.डी. ई.–142/ राष्ट्रीय काव्यधारा/BAG

BAG
(सी.बी.सी.एस.)

सत्रीय कार्य
(जुलाई 2024 तथा जनवरी 2025)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.ई.–142 : राष्ट्रीय काव्यधारा

इग्नू
जन-जन का विश्वविद्यालय

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

हिन्दी में आधार पाठ्यक्रम
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.ई–142 / BAG

प्रिय छात्र / छात्राओ!

'राष्ट्रीय काव्यधारा' पाठ्यक्रम में आपको एक सत्रीय कार्य करना है। यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किये गये हैं।

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। उद्देश्य यह भी है कि अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा और समझा है उसे आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरभं करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. ऐच्छिक पाठ्यक्रम के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानी पूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के प्रथम पृष्ठ के मध्य भाग में पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख कीजिए।
4. उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

अनुक्रमांक : ....
नाम : ....
पता : ....
....

पाठ्यक्रम का नाम / कोड : ....

सत्रीय कार्य कोड : ....
अध्ययन केन्द्र का नाम / कोड : ....   दिनांक : ....

5. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज़ का इस्तेमाल करें और उन कागज़ों को अच्छी तरह से बाँध लें।
6. प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
7. सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निर्धारित तिथि तक अवश्य जमा करा दें।

सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि :

जुलाई 2024: जून 2025 सत्रांत परीक्षा के लिए सत्रीय कार्य जमा करने की
अंतिम तिथि : 31 मार्च, 2025

जनवरी 2025: दिसंबर, 2025 सत्रांत परीक्षा के लिए सत्रीय कार्य जमा करने की
अंतिम तिथि : 30 सितंबर, 2025

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश :

सत्रीय कार्य के तीन खंड हैं और उसमें तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में सभी खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास** : अपने उत्तर का प्रारूप लिखने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार का विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

   यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :
   क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,
   ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
   ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा जो आपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।
   घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
   ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

   1. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसको साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप ज़ोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दीजिए।
   2. **विशेष** : अपने उत्तर की फ़ोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

शुभकामनाओं सहित!

नोट :	याद रखें कि विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य
(संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी..ई–142 / BAG
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.ई–142 / 2024–2025
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड – क

निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिये : 10×4=40

1 उनके अलौकिक दर्शनों से दूर होता पाप था
अति पुण्य मिलता था तथा मिटता हृदय का ताप था।
उपदेश उनके शान्तिकारक थे निवारक शौक के
सब लोक उनका भक्त था, वे थे हितैषी लोक के।।

2 चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं, प्रेमी–माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।।

चाह नहीं, सम्राटों के शव पर, हे हरि, डाला जाऊँ।
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।।

मुझे तोड़ लेना वनमाली।
उस पथ पर देना तुम फेंक।।
मातृ–भूमि पर शीश चढ़ाने।
जिस पथ पर जावें वीर अनेक।।

3 उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजियारी छाई
किंतु कालगति चुपके–चुपके काली घटा घेर लाई
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई
रानी विधवा हुई, हाय! विधि को भी नहीं दया आई।
निसंतान मरे राजाजी रानी शोक–समानी थी
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

4 आज मुक्ति के अरमानों ने
मिलकर यों ललकारा है
ओ सब सोनेवालो, जागो
गूँज रहा नक्कारा है!
कैसी रात? कहाँ के सपने

यह नव प्रभात पधारा है!
ऐसे हँसते–से प्रभात का
तुम करने सम्मान, उठो
उठो, उठो ओ नंगों भूखें
ओ मजदूर किसान उठो।

खंड –ख

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए : **10×4=40**

5. स्वाधीनता संग्राम के संदर्भ में राष्ट्रीय चेतना के विकास को रेखांकित कीजिए।
6. आधुनिक भारतीय साहित्य की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए नवजागरण की विशेषताओं की चर्चा कीजिए।
7. राष्ट्रीयता के विकास में भारतीय कविता के योगदान पर प्रकाश डालिए।
8. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में निहित नारी सम्मान की भावना को रेखांकित कीजिए।

खंड –ग

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए : **5×4=20**

9. सुभद्रा कुमारी चौहान का साहित्यिक परिचय दीजिए।
10. 'विप्लव गायन' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।
11. 'हिमालय' शीर्षक कविता में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना को रेखांकित कीजिए।
12. 'हल्दी घाटी' के पठित अंश का महत्व बताइए।